मालु भवन स्थित वृद्ध साध्वी सेवा केन्द्र में गुंजा स्वर

तेरापंथ में मिलता है सबको न्याय

श्रीडूँगरगढ़ 30 दिसम्बर : आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में स्थानीय मालु भवन स्थित साध्वी सेवा केन्द्र में आयोजित ''हाजरी वाचन'' कार्यक्रम में सम्पूर्ण उपस्थित साधु-साध्वियों ने तेरापंथ की मौलिक मर्यादाओं का सस्वर उच्चारण किया। इस मौके पर सेवा केन्द्र के जन समुदाय के बीच एक ही स्वर गुंज रहा था। सबके कानों में पड़ने वाला वह स्वर था तेरापंथ में सबको न्याय मिलता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने मर्यादाओं का निर्माण किया। जयाचार्य ने गण वृद्धि के सूत्र दिये और मर्यादाओं को व्यवस्थित तौर पर प्रस्तुत किया। आचार्य कालुगणी एवं आचार्य तुलसी ने विकास के नये आयाम खोले । आचार्यप्रवर ने कहा कि किसी संगठन, गण की वृद्धि के लिए एक नेतृत्व का संचालन आव-यक है। सर्व साधु-साध्वियां आचार्य के ही ि-श्य-ि-श्याएं होने चाहिए। उन्होनें इस अवसर पर जयाचार्य द्वारा अपने उतराधिकारी मघवागणी को प्रदत ि-क्षा गीत के माध्यम से युवाचार्य महाश्रमण को धर्मसंघ के सुव्यवस्थित संचालन के सूत्र प्रदान किये। युवाचार्यवर ने आचार्य महाप्रज्ञ को पंचाग वन्दन के साथ ि-क्षाएं ग्रहण की। इस पर आचार्य महाप्रज्ञ ने सभी साधु-साध्वियों के लिए युवाचार्य महाश्रमण की विनम्रता को अनुकरणीय बताया।

युवाचार्य महाश्रमण ने हाजरी वाचन कराते हुए कहा कि न्याय, संविभाग और समभाव के आधार पर तेरापंथ के संविधान का निर्माण किया गया हैं उन्होनें कहा कि एकता, अखण्डता के लिए दल बंधी से बचाव, दूसरों की गलतियों का प्रचार न कर केवल आचार्य को बताना और दूसरों में अनास्था पैदा करने वाली बातचीत न हो इस बात की आव-यकता है। उन्होनें साधु-साध्वियों को समिति, गुप्ति . के प्रति जागरुकता बरतने की प्रेरणा दी।

मुनि सौभ्य एवं मुनि हेमन्त कुमार ने लेख पत्र का वाचन किया। श्री कन्हैयालाल छाजेड़ ने श्रावक समाज के लिए भी मर्यादाओं के निर्माण की आव-यकता बताइ।

।।अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़

दूरभा-ा : 01565-224600,224900

ई-मेलः**jstsdgh01565@gmail.com**

जीवन विज्ञान शिक्षा दर्शन पर कार्यशाला

श्रीडूँगरगढ़ 30 दिसम्बर : तेरापंथ भवन श्री डूँगरगढ़ में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यशाला में प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलाल जी ने जीवन विज्ञान की आवश्यकता के बारे में एक परिचायक वार्ता प्रस्तुत की। उन्होनें वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था के साथ जीवन विज्ञान शिक्षण की आवश्यकता प्रतिपादित की । जीवन विज्ञान की इकाइयों का विस्तृत प्रस्तुत करते हुए मुनिश्री ने प्रयोगों के अभ्यास की विधि, सावधानियों एवं लाभ के बारे में बताया।

इससे पूर्व डॉ. समणी मल्ली प्रज्ञा ने शिक्षा दर्शन एवं जीवन विज्ञान के सम्बन्ध में विस्तृत वक्तव्य दिया। उन्होनें संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में जीवन विज्ञान की भूमिका का विवेचन किया। उन्होनें कहा कि वर्तमान में विजन के साथ साथ मूल्य प्रधान व्यक्तित्व की समाज में आवश्यकता है। जीवन विज्ञान इसकी संपूर्ती का एक आदर्श माध्यम है।

मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों का अभ्यास करवाया तथा जिज्ञासाओं का समाधान दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समणीवृन्द, साध्वीवृन्द एवं श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

सादर प्रकाशनार्थः -

मीडिया संयोजक/सहसंयोजक

संस्कार निर्माण ि-िवर सम्पन्न

श्रीडूँगरगढ़ 30 दिसम्बर :आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य एवं तेरापंथ कि-ोरमण्डल श्री डूँगरगढ़ द्वारा आयोजित चैनरूप धर्मचंद नाहटा परिवार द्वारा प्रायोजित पंचदिवसीय संस्कार निर्माण ि-िवर उत्साह, उमंग एवं नई प्रेरणा के साथ सम्पन्न हुआ। ि-िवर में मुनि सुखलाल, मुनि कि-ानलाल, मुनि राजकरण, मुनि धर्मचंद, मुनि अर्हत् कुमार, मुनि जंबू कुमार, मुनि अभिजित् कुमार, मुनि अमृत कुमार, मुनि जितेन्द्र कुमार, मुनि नीरज कुमार, मुनि सुधाकर, मुनि भरत एवं समण सिद्धप्रज्ञ ने जैन परम्परा, जैन द-र्ान तथा मानसिक :ाक्तियों के विकास हेतु प्रि-िक्षण प्रदान किया। ि-िवर के अंतिम सत्र में पंचर्शि के सदस्य मुनि महावीर, मुनि मनन, मुनि आका-ा एवं मुनि नय कुमार के साथ सीधा संवाद कार्यक्रम आयोजित हुआ। ि-िवर की संयोजना में मुनि दिने-ा कुमार एवं मुनि पीयूश कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही। तेरापंथ कि-ोर मण्डल के संयोजक गौरव झाबक एवं सहसंयोजक अरविन्द लूणिया ने ि-िवर को सफल बनाने में अपना श्रम नियोजित किया।

सोचो

तुम चिन्तन तो बहुत करते हो
तो फिर कुछ करते क्यों नहीं ?
जानते भी हो तुम्हारा संकल्प घट रीता है
तो फिर दृढ़ निश्चय कर भरते क्यों नहीं ?
अदम्य साहस का सागर दबा है तुममें
तो फिर गर्जन कर उभरते क्यों नहीं ?
सोचो, यह जीवन पलपल यों ही बीत जायेगा
इस बात से डरते क्यों नहीं ?

बनेचंद मालू